बेकाबू महंगी

खुदरा महंगीका दो वर्षोंके उच्चतम स्तर ६.०९ प्रतिशतपर पहुंचना गम्भीर चिन्ताका विषय है और इससे आम आदमीपर आर्थिक बोझ बढ़ेगा तथा अर्थव्यवस्थापर भी दूरगामी प्रभाव पड़ेंगे। यह भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) के तय अनुमानसे भी ऊपर पहुंच गया है। इसके पूर्व २०२४ में खुदरा मुद्रास्फीति ६.२५ प्रतिशत थी। सांख्यिकी एवं कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालयकी ओरसे गुरुवारको जारी आंकड़ोंके अनुसार उपभोक्ता मूल्य सूचकांक (सीपीआई) आधारित खुदरा मुद्रास्फीति सितम्बरमें ५.५४ प्रतिशत थी जो अक्तूबरमें बढ़कर ८.९४ प्रतिशत हो गयी। यह भी चिन्ताका विषय है कि शहरी क्षेत्रोंकी तुलनामें ग्रामीण क्षेत्रों खाद्य वस्तुओंकी महंगी अधिक हो गयी है। वस्तुत: महंगीका बढ़ना केवल बाजारमें वस्तुओंकी कीमतमें वृद्धिका मामला नहीं है, बल्कि इसका सीधा प्रभाव आम आदमीकी क्रय शक्ति, घरेलू बजट, बचत, जीवन स्तर और आर्थिक सुरक्षासे है। विशेष रूपसे खाद्य पदार्थोंकी कीमतोंमें तेजीने मध्यम वर्ग, निम्न आय वर्ग और ग्रामीण परिवारोंकी मुश्किलें बढ़ा दी हैं। इसलिए ग्रामीण परिवारोंकी आर्थिक स्थितिपर विशेष ध्यान देनेकी आवश्यकता है। भोजन, सब्जी, फल और रोजमर्राकी आवश्यक वस्तुएं हर परिवारके बजटका अनिवार्य हिस्सा हैं। इसलिए इनके महंगे होनेका प्रभाव भी तत्काल दिखायी देता है। घरेलू खर्चके लिए अब लोगोंको अपेक्षाकृत अधिक धन खर्च करना पड़ेगा। मध्यम वर्गपर दोहरा आर्थिक दबाव बढ़ेगा। बच्चोंकी शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाएं, मकानका किराया और परिवहन खर्च भी बढ़ जायगा। गरीब परिवारोंकी स्थिति और जटिल हो जायगी। आम जनताके जीवन स्तरपर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा। अक्तूबरमें महंगी बढ़नेके पीछे कई आर्थिक और मौसमी कारण हैं। खाद्य तेलकी कीमतोंमें उछाल, अनियमित मानसून, वर्षाका असमान होना, जलाशयोंमें पानीका स्तर और फसलोंकी उत्पादकतामें उतार-चढ़ाव खाद्य आपूर्तिको प्रभावित करते हैं। ऊर्जा और परिवहन लागत भी बढ़ी है। वैश्विक परिस्थितियां महंगी बढ़ानेमें काफी सहायक रही हैं। भारतीय रिजर्व बैंकके सामने भी नयी चुनौतियां उत्पन्न हो गयी हैं। आरबीआई दिसम्बरमें पुन: रेपो रेट बढ़ा सकती है। इससे ब्याज महंगा हो जायगा। महंगीपर नियंत्रणके साथ विकासकी गति बनाये रखनेकी भी चुनौती है। आने वाले दिनोंमें निवेशपर प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है और रुपयेपर भी दबाव बढ़ेगा। महंगीपर नियंत्रण अब प्राथमिक आवश्यकता बन गयी है। सरकार और आरबीआई दोनोंको समन्वित ढंगसे प्रभावी कदम उठाने होंगे अन्यथा स्थिति और विषम हो जायगी।

मुंहतोड़ जवाब जरूरी

जम्मू-कश्मीरके कुलगाम जिलेमें बुधवारको सीआरपीएफ जवानोंपर घात लगाकर किये गये हमलेके बाद जम्मू संभागके किश्तवाड़ जिलामें गुरुवार सुबह एक बार फिर सुरक्षा व्यवस्थाको चुनौती देते हुए आतंकियोंने दो विशेष पुलिस अधिकारियों (एसपीओ) की हत्या कर दी। ये दोनों अधिकारी बुधवारको दच्छन क्षेत्रसे लापता थे, जिनका गोलियोंसे छलनी शव गुरुवार तड़के सुरक्षाबलने बरामद किये। दोनोंकी सर्विस राइफलें भी गायब हैं जिससे घटनामें आतंकी हमलेका सन्देह है। दोनों एसपीओ दच्छनके कियार गांवमें स्थानीय पुलिसकी एसओजीमें तैनात थे और घटनाके दिन अपने शिविरसे धारणामारवाह स्थित सेनाकी एक चौकीकी ओर जाते समय लापता हो गये थे। इन दोनों शहीद जवानों (एसपीओ) की कई आतंकरोधी अभियानोंमें सक्रिय भूमिका रही है। स्थानीय होनेके कारण क्षेत्रकी भौगोलिक स्थितिसे अच्छी तरह परिचित थे और सेनाके साथ आतंकवाद अभियानों और गश्तमें सहयोग करते थे। घटनास्थलसे पाकिस्तान निर्मित कारतूसका मिलना इस बातका प्रमाण है कि यह आतंकी हमला है और इसमें पाकिस्तानका हाथ है। अभी इसी हफ्तेमें एक खुफिया इनपुट मिला था जिसमें कहा गया था कि गुलाम कश्मीरके सात-आठ लांच पैड पूरी तरह सक्रिय कर दिये गये हैं, तभी इस बातकी आशंका प्रबल हो गयी थी कि सीमापारसे आतंकियोंकी घुसपैठका प्रयास किया जा सकता है। हालांकि भारतीय सुरक्षा सर्तक और घुसपैठके संवेदनशील इलाकोंकी घेराबंदी भी कर ली गयी है लेकिन लगता है कुछ आतंकी पहलेसे ही घाटीमें प्रवेश कर चुके हैं और स्थानीय स्लीपर सेलकी मददसे सुरक्षित छिपे हुए हैं। आपरेशन सिन्दूर खत्म नहीं हुआ है। इस बातको कई मंचोंसे और कई बार सरकारकी ओरसे कहा जा चुका है। यह भी कहा गया है कि पाकिस्तानकी ओरसे किये गये किसी भी आतंकी हमलेको जंगका ऐलान माना जायगा। अब समय आ गया है कि पाकिस्तानको इसका मुंहतोड़ जवाब दिया जाय। आतंकियोंने अब रणनीति बदल दी है। अब वे जनताको नहीं सुरक्षाबलोंको निशाना बनानेकी रणनीतिपर चल रहे हैं, ताकि जम्मू-कश्मीरमें आतंकवादकी राखमें दबी चिंगारीको फिरसे धधका कर दहशतका माहौल बनाया जा सके। इनकी गतिविधियोंपर सतर्क निगाह रखनेकी जरूरत है।

लोक संवाद

सर्दियोंमें ब्रेन स्ट्रोकका बढ़ता खतरा

महोदय,- ठंडके मौसममें ब्लड प्रेशर बढ़ना, खूनका गाढ़ा होना और शरीरकी रक्त नलिकाओंका सिकुड़ना स्ट्रोकका प्रमुख कारण बनता है। ब्रेनमें होने वाली ब्लड क्लॉटिंगकी वजह भी ब्रेन हेमरेजका कारण बन सकती है। एथेरोस्क्लेरोसिसकी वजहसे भी ब्रेन हेमरेजका खतरा बढ़ता है। ब्रेन स्ट्रोक आपके शरीरको कई तरहसे प्रभावित कर सकता है। इसे एक तरहसे आप लकवा भी कह सकते हैं। यह समस्या ५० सालसे अधिक उम्र वाले लोगोंमें देखनेको मिलती है। लेकिन बीते कुछ सालोंमें ३० से ३५ सालसे कम उम्र वाले लोगोंमें भी यह दिक्कत देखनेको मिल रही है। मेडिकल टर्ममें इसे इंट्राक्रानियल हेमरेजके नामसे जाना जाता है। ब्रेन हेमरेजको लेकर सबसे बड़ा सवाल यह उठता है कि आखिर यह कैसे होता है। ब्रेन हेमरेजके कई कारण हो सकते हैं। जैसे, कार दुर्घटना, सिरपर किसी तरहकी चोट लगनेसे ब्रेन हेमरेज हो सकता है। हाई बीपीकी वजहसे भी दिमागकी नसोंको जो ब्लड वेसेल्सकी दीवारोंको नुकसान पहुंचा सकता है और ब्लड वेसेल्सकी ब्लीडिंग या फटनेका कारण बन सकता है। ब्रेनमें होने वाली ब्लड क्लॉटिंगकी वजह भी ब्रेन हेमरेजका कारण बन सकती है। दिमागकी नसोंकी दीवारोंके अन्दर अमाइलाइड प्रोटीन यानी सेरेब्रल अमाइलॉइड एंजियोपैथीकी वजहसे भी ब्रेन हेमरेज होता है। ब्रेन ट्यूमर जो दिमागके टिश्यूपर दबाव डालता है इससे भी ब्लीडिंग हो सकती है और ब्रेन हेमरेज हो जाता है। जब ब्रेनको सही मात्रामें आक्सीजन नहीं मिल पाती है तो दिमागके सैल्स मरने लगते हैं। ऐसेमें शरीरकी गतिविधियां प्रभावित होने लगती हैं। जिसे इंट्राक्रानियल हेमरेज या सेरेब्रल हेमरेज कहा जाता है। ऐसेमें यदि तीनसे चार मिनटसे अधिक समयतक आक्सीजनकी कमी हो जाय तो इससे दिमागकी नसें बुरी तरहसे प्रभावित होती है। ऐसेमें शरीरके किसी भागमें लकवा मारना, शरीरका कोई हिस्सा सुन्न होना या कमजोरी होना। खाने-पीनेमें कठिनाई होना, आंखोंकी रोशनीपर असर पड़ना, दौरे पड़ना और सिरदर्द होना, इसकी वजह इनसानकी मौत भी हो सकती है। ब्रेन हेमरेजसे बचना है तो हमेशा अपना बीपी चैक करवाते रहें। खासकर हाई बीपीके मरीजको तो अकसर अपना बीपी चैक करवाते रहना चाहिए। हाई कोलेस्ट्रॉलको कंट्रोल करनेके लिए वजन कंट्रोलमें रहना बेहद जरूरी है। ऐसेमें शराब कम पियें साथ ही साथ हेल्दी डाइट लें और रोजाना एक्सरसाइज करें। डायबिटीज है तो शुगरको हमेशा कंट्रोलमें रखें। सर्दियोंमें ब्रेन स्ट्रोकका खतरा इसलिए बढ़ जाता है क्योंकि इस मौसममें खून गाढ़ा हो जाता है। जिसके कारण ब्लडपर प्रेशर पड़ता है। ब्लड प्रेशरके मरीजोंको ब्रेन स्ट्रॉकका खतरा बढ़ता है। ब्लड प्रेशर ज्यादा होनेपर दिमागकी नसें फट सकती हैं या उसमें रुकावट पैदा हो सकती है। सर्दीके मौसममें बीपीको कंट्रोलमें रखना बेहद जरूरी है। ब्रेन स्ट्रोकके मरीजको तीन घंटेके अंदर अस्पताल ले जाना बेहद है जरूरी। किन लोगोंको बचकर रहनेकी जरूरत है टाइप-२ डायबिटीजके मरीज, हाई बीपीके मरीज, जिन लोगोंका ज्यादा वजन है, जिन लोगोंका कॉलेस्ट्रोल बढ़ा हुआ है। **-के. जैन, वाया ईमेल।**

भारतकी घेराबंदीकी कोशिशमें तुर्किये

मक्का पैक्टमें यदि बंगलादेश शामिल होता है तो भारत और पाकिस्तानके बीच युद्धकी स्थितिमें ढाकाको इस्लामाबादका पक्ष लेना होगा। हालांकि बंगलादेशका इसमें शामिल होनेका कोई भी कदम भारतीय सहयोगको मुश्किल बना सकता है। यह भारतके लिए खतरेकी घंटी है।

❐ पुष्परंजन

बंगलादेशके प्रधानमंत्री तारिक रहमान तुर्कियेके अंताल्यामें हैं। कॉन्फ्रेंस आफ द पार्टीज (सीओपी३१) के शिखर सम्मेलनमें उनका आना एक औपचारिकता और रस्मों-उल्फत निभाने जैसा नहीं है। यह संयुक्त राष्ट्र जलवायु परिवर्तन सम्मेलन (यूएनएफसीसीसी) का ३१वां वार्षिक सत्र है। इस सम्मेलनकी मेजबानी तुर्किये कर रहा है। सम्मेलनका मुख्य मकसद वैश्विक तापमान वृद्धिको १.५ डिग्री सेल्सियसतक सीमित रखनेके प्रयासोंकी समीक्षा करना है। केन्द्रीयमंत्री भूपेन्द्र यादव जलवायु वार्तामें भारतके प्रतिनिधिमंडलका नेतृत्व कर रहे हैं। एर्दोआनसे रिश्ते बेहतर होते तो संभवत: प्रधान मंत्री मोदी वहां जाते। तुर्कियेके राष्ट्रपति रेचेप तैय्यप एर्दोआनने १० नवम्बरको तुर्कियेके अंताल्यामें बंगलादेशसे संबंधोंको मजबूत करनेके लिए एक द्विपक्षीय बैठक की। लगभग तीस मिनटकी बैठकमें विदेशमंत्री डा. खलीलुर रहमान और विदेश मामलोंके राज्य मंत्री हुमायूं कोबीर भी मौजूद थे। विदेश सचिव सलाहुद्दीन नोमान चौधरीने बताया कि बंगलादेशकी मुख्य प्राथमिकताओं में अनुकूलनके लिए वित्त जुटाना, नुकसान और क्षतिके मुद्दोंको संबोधित करना और विकसित देशों द्वारा जलवायु वित्तके लिए किये गये वादोंको प्रभावी ढंगसे लागू कराना शामिल है।

विदेश सचिवने बताया कि सम्मेलनके दौरान जूट उत्पादोंके उपयोग और प्रचार-प्रसारको लेकर बंगलादेश और तुर्कियेके बीच एक संयुक्त घोषणापत्रपर हस्ताक्षर होनेकी भी उम्मीद है। लेकिन असली कार्ड अभी खोला नहीं गया है। क्या बंगलादेश, 'मक्का जॉइंट डिफेंस एग्रीमेंट' का हिस्सा बनना चाहता है। मक्का संयुक्त रक्षा समझौता सऊदी अरब, पाकिस्तान और तुर्कियेके बीच ७ अगस्त, २०२६ को मक्कामें हुआ एक त्रिपक्षीय रक्षा समझौता है। नाटोके अनुच्छेद-५ की तर्जपर किये गये समझौतेपर गौर कीजिए, जिसके अनुसार, तीनों देशों (सऊदी अरब, पाकिस्तान और तुर्किये) मेंसे किसी एकपर भी किया गया सशस्त्र हमला तीनोंपर हमला माना जायगा। मक्का समझौतेके तहत तीनों देश आपसमें खुफिया जानकारी साझा करेंगे, रक्षा उत्पादन और हथियारोंके निर्माणमें एक-दूसरेकी मदद करेंगे और आतंकवादके खिलाफ संयुक्त रूपसे काम करेंगे। मक्का पैक्टमें यदि बंगलादेश शामिल होता है तो भारत और पाकिस्तानके बीच युद्धकी स्थितिमें ढाकाको इस्लामाबादका पक्ष लेना होगा। यह भारतके लिए खतरेकी घंटी है। बंगलादेशके विदेशमंत्री खलीलुर रहमानने पिछले दिनों संसदमें एक सवालके जवाबमें कहा था, 'हम इस पैक्टको पॉजिटिव नजरियेसे देखते हैं।' जब बंगलादेशी नेताओं और राजनयिकोंके कमेंट्सके हवालेसे पूछा गया तो भारतने कहा कि इस पैक्टका उसकी राष्ट्रीय सुरक्षापर असर पड़ेगा और वह हालातपर करीबसे नजर रख रहा है। हालांकि बंगलादेशका इसमें शामिल होनेका कोई भी कदम भारतीय सहयोगको मुश्किल बना सकता है। दोनों देशों के बीच ४,०९६ किलोमीटरकी जमीनी सीमा है और उनके बीच मजबूत सांस्कृतिक-आर्थिक रिश्ते हैं। इन रिश्तोंमें कैसे दरार आये, इसका प्रयास एर्दोआन पाकिस्तानके सहयोगसे करने लगे हैं। ढाकामें नॉर्थ साउथ यूनिवर्सिटीके राजनीति विज्ञानके प्रोफेसर नवीन मुर्शिदकी धारणा है कि मक्का एग्रीमेंटके जरिये बंगलादेशको अपने साथ जोड़नेमें पाकिस्तानकी दिलचस्पी भौगोलिक और राजनीतिक वजहोंसे है। उन्होंने कहा, भारतके लिए, सिलीगुड़ी कारिडोर और उसकी पूर्वी सीमाकी सुरक्षा जरूरी बातें हैं। उन्होंने भारतके अपने उत्तर-पूर्वी राज्योंसे पतले जमीनी संपर्कका जिक्र करते हुए कहा कि उत्तरमें बंगलादेश उसे घेरे हुए है। उन्होंने समझाया कि ऐसे हालातमें बंगलादेशको साफ तौरपर यह तय करना होगा कि वह इस अलायंसमें शामिल होकर क्या करेगा और क्या नहीं करेगा। लेकिन ढाकामें रहने वाले पूर्व राजनयिक एम. हुमायूं कबीरको बंगलादेशके इस समझौतेमें शामिल होनेका कोई कारण नहीं दिखता। उनकी टिप्पणी थी, बंगलादेश पिछले ५० से ५५ वर्षोंमें किसी भी सैन्य गठबंधनमें शामिल नहीं हुआ है। जहांतक मेरा सवाल है, मेरा मानना है कि आज भी यह रुख बदला नहीं है।

क्या वास्तवमें पूर्व राजनयिक एम. हुमायूं कबीर जो सोच रहे हैं, वह सही है। ऐसा लगता नहीं। बंगलादेशमें राजनीतिक बदलावोंके बाद, एर्दोआन प्रशासनने ढाकाके साथ अपने संबंधोंको काफी मजबूत किया है। बंगलादेशने तुर्कियेसे सैन्य उपकरण खरीदे हैं, जिनमें बायराक्तार टीबी-२ ड्रोन, टीआरजी-३०० मिसाइल सिस्टम, कोबरा बख्तरबंद वाहन और बोरान होवित्जर तोपें शामिल हैं। इसके साथ ही दोनों देश रक्षा उपकरणोंके संयुक्त उत्पादन और औद्योगिक सहयोगपर भी काम कर रहे हैं। तुर्कियेके राष्ट्रपति रेचेप तैय्यप एर्दोआन और बंगलादेशके प्रधान मंत्री तारिक रहमानकी अंताल्यामें हुई मुलाकातको औपचारिक मत मानिये। इस दौरान उन्होंने रक्षा, व्यापार, ऊर्जा सुरक्षा और जलवायु परिवर्तन जैसे क्षेत्रोंमें आपसी सहयोग बढ़ानेपर चर्चा की। प्रधान मंत्री रहमानने एर्दोआनको बंगलादेशकी आधिकारिक यात्राके लिए भी आमंत्रित किया है। तुर्कियेका लक्ष्य २०३० तक दुनियाके शीर्ष रक्षा निर्यातकोंमें शामिल होना है। इसके लिए वह दक्षिण एशियाई साझेदारियोंका उपयोग प्रमुख बाजारों और उत्पादन केन्द्रोंके रूपमें कर रहा है।

एक बात तो सुनिश्चित है एर्दोआन हिन्द महासागर क्षेत्रमें अपना प्रभाव बढ़ानेके लिए 'इस्लामिक एकजुटता', 'ग्लोबल साउथ' (विकासशील देशों) के पक्ष वाले विमर्श और सुरक्षा सहायताका सहारा ले रहे हैं। इसके जरिये वे मुस्लिम जगतमें मौजूद प्रतिद्वंद्वी शक्ति संरचनाओंको चुनौती भी देना चाहते हैं। तुर्कियेने रोहिंग्या शरणार्थी मुद्देपर लगातार बंगलादेशका समर्थन किया है। एर्दोआनने कॉक्स बाजारमें मानवीय सहायता पहुंचायी और अंतरराष्ट्रीय न्यायालय तथा इस्लामिक सहयोग संघटन (ओआईसी) में भी ढाकाके रुखका समर्थन किया है। विशेषज्ञोंका मानना है कि एर्दोआन खुदको वैश्विक मुस्लिम समुदाय (उम्माह) के एक प्रमुख संरक्षक और नेताके रूपमें स्थापित करना चाहते हैं।

इसके लिए वे कश्मीर, रोहिंग्या संकट और फिलस्तीन जैसे मुद्दोंको संयुक्त राष्ट्र जैसे अंतरराष्ट्रीय मंचोंपर प्रमुखतासे उठाते हैं, ताकि पारम्परिक खाड़ी देशों (जैसे सऊदी अरब) के समानांतर अपना प्रभाव बना सकें। दक्षिण एशियाके छोटे-छोटे देशोंमें राजनीतिक बदलावोंके बीच तुर्कियेने बंगलादेश और मालदीवके साथ अपने कूटनीतिक, मानवीय और रक्षा संबंधोंको तेज किया है। ये छोटे देश भारत और चीनके बीच संतुलन बनानेके लिए तुर्कियेको एक नये विकल्पके रूपमें देख रहे हैं, जिसका लाभ अंकारा अपना प्रभाव बढ़ानेके लिए उठा रहा है। एर्दोआनकी पहली प्राथमिकता दक्षेसके मुस्लिम सदस्य देशोंको साधनेकी रही है, जिनमें पाकिस्तान, बंगलादेश, मालदीव और अफगानिस्तान उसके लक्ष्यमें हैं।



दक्षिण एशियाके छोटे-छोटे देशोंमें राजनीतिक बदलावोंके बीच तुर्कियेने बंगलादेश और मालदीवके साथ अपने कूटनीतिक, मानवीय और रक्षा संबंधोंको तेज किया है। ये छोटे देश भारत और चीनके बीच संतुलन बनानेके लिए तुर्कियेको एक नये विकल्पके रूपमें देख रहे हैं, जिसका लाभ अंकारा अपना प्रभाव बढ़ानेके लिए उठा रहा है। एर्दोआनकी पहली प्राथमिकता दक्षेसके मुस्लिम सदस्य देशोंको साधनेकी रही है, जिनमें पाकिस्तान, बंगलादेश, मालदीव और अफगानिस्तान उसके लक्ष्यमें हैं।

लोकसंस्कृतिकी जीवन्तताका महापर्व

किसी पर्वकी पहचान केवल उसकी धार्मिक मान्यताओंसे नहीं बनती, बल्कि उससे जुड़े जीवन-मूल्यों, लोकपरम्पराओं और सामूहिक संवेदनाओंसे भी बनती है। छठ महापर्व इसका एक सुन्दर उदाहरण है।

❐ महेन्द्र तिवारी

छठ महापर्वका मूल आधार सूर्योपासना और प्रकृतिके प्रति कृतज्ञता है। सूर्यको जीवन, ऊर्जा और प्रकाशका स्रोत माना गया है। इस पर्वमें सूर्यके साथ छठी मैयाकी आराधना की जाती है। लोकमान्यताके अनुसार छठी मैया संतानोंकी रक्षा करती हैं और परिवारमें सुख, समृद्धि तथा आरोग्य प्रदान करती हैं। इस पर्वकी सबसे विशिष्ट बात यह है कि इसमें केवल उगते सूर्यकी ही नहीं, बल्कि अस्त होते सूर्यकी भी उपासना की जाती है। संसार जहां प्राय: उगते सूर्यको प्रणाम करता है, वहीं छठ हमें अस्त होते सूर्यके प्रति भी सम्मान व्यक्त करना सिखाता है। चार दिनोंतक चलने वाला यह महापर्व नहाय-खायसे आरम्भ होता है। दूसरे दिन खरनाके अवसरपर व्रती पूरे दिन उपवास रखती हैं। इसके बाद लगभग छत्तीस घंटेका निर्जला व्रत आरम्भ होता है। तीसरे दिन संध्याके समय किसी जलाशयके किनारे अस्ताचलगामी सूर्यको अर्घ्य दिया जाता है। चौथे दिन प्रात:काल उदीयमान सूर्यको अर्घ्य अर्पित करनेके साथ व्रतका समापन होता है। बांसके सूप और दउरेमें सजे फल, नारियल, गन्ना, ठेकुआ और अन्य प्रसाद इस पर्वकी पारम्परिक पहचान हैं। छठके वैश्विक विस्तारके पीछे प्रवासी भारतीयोंकी महत्वपूर्ण भूमिका है। शिक्षा, रोजगार, व्यापार और बेहतर जीवनकी तलाशमें बिहार तथा पूर्वांचलके लाखों लोग दुनियाके अलग-अलग देशोंमें पहुंचे हैं। वे अपने साथ अपनी भाषा, लोकगीत, खान-पान और सांस्कृतिक परम्पराएं भी ले गये। यही कारण है कि आज मॉरीशस, फिजी, सूरीनाम, नेपाल, संयुक्त राज्य अमेरिका, ब्रिटेन, कनाडा, आस्ट्रेलिया, सिंगापुर और खाड़ी देशोंमें छठ मनाया जाता है। भारत सरकारके संस्कृति मंत्रालयने भी सितंबर २०२५ में छठके अंतरराष्ट्रीय स्वरूपको रेखांकित करते हुए संयुक्त अरब अमीरात, सूरीनाम और नीदरलैंडके राजनयिक प्रतिनिधियोंके साथ इसकी बहुराष्ट्रीय मान्यताके लिए विचार-विमर्श किया था। मारीशसमें छठकी परम्परा विशेष रूपसे उल्लेखनीय है। यहां भारतीय मूलके लोगोंकी बड़ी आबादी है, जिनकी सांस्कृतिक स्मृतियोंमें बिहार और पूर्वांचलकी परम्पराएं आज भी जीवित हैं। फिजी और सूरीनाममें भी भारतीय मूलके परिवार इस पर्वको अपनी सांस्कृतिक विरासतके रूपमें संजोये हुए हैं। नेपालके तराई क्षेत्रमें छठकी परम्परा अत्यंत प्राचीन और व्यापक है। संयुक्त राज्य अमेरिकाके न्यू जर्सी, न्यूयॉर्क, कैलिफोर्निया, टेक्सास और अन्य क्षेत्रोंमें भारतीय समुदाय सामूहिक रूपसे इस पर्वका आयोजन करता है। ब्रिटेनके लंदन, बर्मिंघम और लीसेस्टरमें भी छठके अवसरपर श्रद्धालु एकत्र होते हैं।

विदेशोंमें छठ मनाना आसान नहीं होता। भारतके गांवोंकी तरह हर जगह नदी, तालाब या पारम्परिक घाट उपलब्ध नहीं हैं। कहीं कृत्रिम जलकुंड बनाये जाते हैं तो कहीं झीलों और सार्वजनिक जलाशयोंके किनारे पूजाकी व्यवस्था की जाती है। बांसके सूप, मिट्टीके दीपक और अन्य पारम्परिक पूजन सामग्री जुटाना भी चुनौतीपूर्ण होता है। इसके बावजूद श्रद्धालु अपनी सामर्थ्य और उपलब्ध संसाधनोंके अनुसार परम्पराओंका निर्वाह करते हैं। यह दृश्य बताता है कि संस्कृति केवल भौगोलिक परिस्थितियोंकी मोहताज नहीं होती, वह मनुष्यकी आस्था और संकल्पसे जीवित रहती है। इस वैश्विक विस्तारका एक भावनात्मक पक्ष भी है। विदेशोंमें रहने वाले अनेक लोगोंके लिए छठ अपने गांव, घर, परिवार और बचपनकी स्मृतियोंसे मिलनेका अवसर है। विशेष बात यह है कि विदेशोंमें पली-बढ़ी नयी पीढ़ी भी अपने माता-पिता और दादा-दादीसे इस पर्वकी परम्पराएं सीख रही है। इस प्रकार छठ पीढ़ियोंके बीच सांस्कृतिक संवादका माध्यम बन रहा है। छठका महत्व केवल धार्मिक आस्थातक सीमित नहीं है। इसमें पर्यावरण संरक्षण, सामाजिक समानता और सामुदायिक सहयोगके गहरे संदेश निहित हैं। सूर्य, जल, धरती और प्रकृतिके प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने वाला यह पर्व हमें प्राकृतिक संसाधनोंके महत्वका बोध कराता है। इसमें भव्य मंदिरों, महंगी सजावट और दिखावेकी आवश्यकता नहीं होती। नदी, तालाब, जल और स्वच्छ वातावरण ही पूजाके प्रमुख आधार हैं। घाटोंपर जाति, वर्ग और आर्थिक स्थितिके भेदभावको पीछे छोड़कर लोग एक साथ खड़े होते हैं। इस दृष्टिसे छठ सामाजिक समरसता और सामूहिक उत्तरदायित्वका भी उत्सव है।

छठको अंतरराष्ट्रीय सांस्कृतिक पहचान दिलानेकी दिशामें भारत सरकारने महत्वपूर्ण पहल की है। संस्कृति मंत्रालयने इसे मानवताकी अमूर्त सांस्कृतिक विरासतकी प्रतिनिधि सूचीमें शामिल करानेके लिए बहुराष्ट्रीय नामांकनकी प्रक्रिया शुरू की। अगस्त २०२६ में भारत सरकारने राज्यसभामें जानकारी दी कि छठ महापर्वका नामांकन दस्तावेज यूनेस्कोको भेजा जा चुका है। इस पहलमें मॉरीशस सहित अन्य देशोंकी भागीदारी भी महत्वपूर्ण है। हालांकि नामांकन भेजा जाना और अंतिम मान्यता प्राप्त होना अलग-अलग प्रक्रियाएं हैं, लेकिन यह कदम छठकी वैश्विक सांस्कृतिक महत्ताको स्वीकार करनेकी दिशामें उल्लेखनीय है। इससे पर्वकी परम्पराओंका व्यवस्थित अभिलेखन, संरक्षण और भावी पीढ़ियोंतक उनका हस्तांतरण सुनिश्चित करनेमें सहायता मिलेगी। आज जब दुनिया सांस्कृतिक टकराव, पर्यावरण संकट और सामाजिक विभाजन जैसी चुनौतियोंसे जूझ रही है, तब छठका सन्देश पहलेसे अधिक प्रासंगिक दिखाई देता है। यह पर्व हमें प्रकृतिके प्रति विनम्रता, जीवनके प्रति कृतज्ञता, कठिन साधनाके प्रति निष्ठा और समाजके प्रति सहयोगका भाव सिखाता है। इसमें आस्था है, लेकिन आडंबर नहीं, अनुशासन है, लेकिन प्रदर्शन नहीं, सामूहिकता है, लेकिन भेदभाव नहीं। छठ अब केवल बिहार या पूर्वांचलकी पहचान नहीं रह गया है। यह भारतीय लोकसंस्कृतिका ऐसा प्रकाशपर्व बन चुका है, जिसकी आभा महाद्वीपोंकी सीमाएं पार कर रही है। दुनियाके किसी भी कोनेमें जब कोई व्रती जलमें खड़ी होकर डूबते सूर्यको अर्घ्य देती है तो उसके हाथोंमें केवल पूजाका सूप नहीं होता, बल्कि अपनी मिट्टी, अपने पुरखों और अपनी सांस्कृतिक विरासतके प्रति अटूट प्रेम भी होता है। सच तो यह है कि छठका सूर्य भले ही अलग-अलग देशोंके आकाशमें अस्त और उदित होता हो, लेकिन उसके प्रति श्रद्धाका भाव पूरी मानवताको एक सूत्रमें बांधनेकी क्षमता रखता है।



आत्मा और परमात्मा

❐ श्रीराम शर्मा

पुरातन कालमें एक अपराजित हेय दैत्य कृतवीर्यके आतंकसे दसों दिशाओंमें हाहाकार मच गया था। देवता और मनुष्योंमेंसे कोई उससे लोहा ले सकनेकी स्थितिमें नहीं था। सभी असहाय बने जहां-तहां अपनी जान बचाते फिरते थे। उपाय ब्रह्माजीने सोचा। भगवान शंकरको एक प्रतापी पुत्र उत्पन्न करनेके लिए सहमत किया। वही इस प्रलय दूतसे लड़ सकता था। कार्तिकेय स्वामी जन्मे। अग्निने उन्हें गर्भमें रखा। कृतिकाओंने पाला और इस योग्य बनाया कि वह अकेला ही चुनौती देकर कृतवीर्यको परास्त कर सके। ऐसा ही हुआ भी और संकट टलनेका सुयोग आया था। इस पौराणिक उपाख्यानमें कितना सत्य और कितना अलंकार है यह कहना कठिन है, परन्तु प्रस्तुत विभीषिकाएं सचमुच ही ऐसी हैं, जिन्हें कृतवीर्यके आतंक तुल्य ठहराया जा सके। जो सामने हैं, उनकी परिणति महाप्रलय होने जैसी मान्यता हर विचारशीलकी बनती जा रही है। अणु युद्धकी विभीषिका किसी भी दिन साकार हो सकती है और इस धरतीपर विषाक्तताके अतिरिक्त और कुछ बचनेके आसार नहीं हैं। बढ़ती जनसंख्याके लिए निर्वाह साधन अगले दिनों भी मिलते रहेंगे, इसकी कोई संभावना नहीं है। अन्न, जल ही नहीं, शुद्ध वायुतक मिलना संभव न रहेगा। लोग भूख, प्यास, घुटनसे दम तोड़ेंगे। व्यक्तिको स्वास्थ्य, संतोष, सुरक्षा, संपदा सभीसे वंचित होना पड़ेगा। अनाचारकी मान्यता देनेवाले समाजमें स्नेह, सहकार और न्यायके लिए क्या स्थान रहनेवाला है। विशृंखलित और विग्रही समाजका कोई भी सदस्य चैनसे न रह सकेगा। इन परिस्थितियोंका विवेचन हर क्षेत्रके मूर्धन्य विचारशील कर रहे हैं और एक स्वरमें इस निष्कर्षपर पहुंच रहे हैं कि समय रहते न चेता गया तो मनुष्य जातिको सामूहिक आत्महत्याके लिए बाधित होना पड़ेगा। इस प्रसंगमें शास्त्रकार, दिव्यदर्शी, ज्योतिषी, भविष्यवक्ता भी अपने-अपने तर्क प्रमाण प्रस्तुत करते हुए यह घोषित करते हैं कि दुर्दिनोंकी विपत्ति बेला अब कुछ ही दिनोंमें आ धमकनेवाली है। बढ़ते तापमानसे ध्रुव पिघलने, समुद्र उफनने और हिम युग वापस लौटने जैसी चर्चाएं आये दिन सुननेको मिलती रहती हैं। कोई चाहे तो इन परिस्थितियोंकी कृतवीर्य महादैत्यके समयसे तुलना कर सकता है, जो किसीके भी झुकाये न झुक पा रहा है। ऐसे समयमें अध्यात्म शक्ति ही कारगर होती रही है। विश्वामित्रका यज्ञ जिसकी रक्षा करने राम, लक्ष्मण गये थे, सामयिक आतंकको टालनेकी पृष्ठभूमि बनानेके लिए ही किया गया था। दधीचिके अस्थिदानके पीछे भी यही उद्देश्य था। कार्तिकेय जैसी अध्यात्म क्षमता उत्पादित करनेके प्रयत्नोंके साथ किसी प्रकार संगति बैठानी हो तो प्रज्ञा परिजनों द्वारा संचालित प्रज्ञा पुरश्चरणसे बैठ सकती है, जिसमें चौबीस लाख व्यक्ति एक समयपर एक विधानसे वातावरण संशोधनकी साधना करते हैं। इसीकी एक कड़ी इस अनुभव प्रयासके साथ जुड़ती है, जिसमें एकांतवासके साथ उग्र तपश्चर्या करनेका निर्धारण है।

बच्चोंमें बढ़ती आक्रामकता

❐ प्रमोद कुमार वाजपेयी

पिछले दिनों बच्चोंके हिंसक और असामान्य व्यवहारसे जुड़ी कई घटनाएं सामने आयीं। मध्य प्रदेशके मंदसौर जिलेमें एक १२ वर्षीय लड़कीने चार सालके बच्चेको छतपर बनी पानीकी टंकीमें डुबो दिया। वहीं, पंचकूलाके एक सरकारी स्कूलमें छह वर्षीय बच्चीके साथ हुई बर्बरताकी खबरने संवेदनशील समाजको भीतरतक झकझोर दिया। आखिर इतनी कम उम्रमें बच्चोंमें इतना गुस्सा कहांसे आ रहा है। स्कूल परिसरमें एक मासूम बच्चीकी सुरक्षा सुनिश्चित क्यों नहीं हो सकी। सबसे बड़ा सवाल यह है कि क्या आज बचपन पहलेकी तुलनामें अधिक असुरक्षित होता जा रहा है। पंचकूलाकी घटनामें पीड़ित बच्चीकी पीड़ा और उसके भविष्यपर पड़ने वाले प्रभावके साथ हिंसा करने वाले आठ वर्षीय बच्चेके व्यवहारको समझना भी ज